पिट्स

आर.एन.आई. ३८१३९/८१

www.pits.co.in

वर्ष २१ अंक-२७ सोमवार, २३ फरवरी २००९ पृष्ठ १६ मूल्य दो रुपये

इंदौर, मुंबई से एक साथ प्रकाशित

गोविंदा हो सकते हैं इंदौर से प्रत्याशी

कांग्रेस आलाकमान ने इंदौर लोकसभा सीट को उन महत्वपूर्ण सीट में रखा है जिस पर वह जीतने की हर कोशिश करना चाहती है. लगातार 6 चुनावों से इस सीट पर पराजित हो रही कांग्रेस को यहां से ऐसे दमदार प्रत्याशी की तलाश है जो भाजपा के इस अजेय दुर्ग को ध्वस्त कर सके. पार्टी की इसी कोशिश के चलते फिल्म अभिनेता और मुंबई के सांसद गोविंदा के नाम पर भी पार्टी आलाकमान विचार कर रहा है. आलाकमान के इस प्रस्ताव को लेकर कांग्रेस दूत ने गोविंदा से संपर्क किया है. यूं भी गोविंदा अपनी सीट बदलने के इच्छुक है. यदि गोविंदा को इंदौर भा गया तो भाजपा की अजेय प्रत्याशी सुमित्रा महाजन के सामने गोविंदा चुनौती बन सकते हैं.

ऑस्कर अवार्ड -२००९

रहमान को मान भारत को सम्मान

लॉस एंजिलिस । इस बार ऑस्कर इंडियन हो गया। स्लमडॉग मिलिनेयर ने बेंजामिन बटने को जबरदस्त टक्कर दी। 13 नोमिनेशन के बाद भी बेंजामिन बटन को सिर्फ 3 ऑस्कर मिले, जबकि स्लमडॉग मिलिनेयर को 10 में नोमिनेशन में से 8 अवॉर्ड मिले। यह बहुत बडी उपलब्धि है।

इससे भी बडी उपलब्धि है, रहमान के संगीत और गुलजार के गाने को पुरस्कार मिलना। जय हो की गूंज अब पूरी दुनिया में है। रसूल पकुट्टी को भी बेस्ट साउंड मिक्सिग कैटेगरी में ऑस्कर मिला है। एक तरह से देखें तो पूरे ऑस्कर में कई हिन्दुस्तानी चेहरे नजर आए।

रहमान को बेस्ट म्यूजिक सॉन्ग के लिए अवॉर्ड मिला। रहमान को दूसरा ऑस्कर अवार्ड बेस्ट ओरिजिनल सॉन्ग के लिए दिया गया। यह अवार्ड स्लमडॉग मिलिनेयर के गाने जय हो के लिए दिया गया। इस गाने को गुलजार ने लिखा है।

एक और भारतीय रसूल पकुट्टी को बेस्ट साउंड मिक्सिग के लिए ऑस्कर सम्मान दिया गया। स्लमडॉग मिलिनेयर को बेस्ट फिल्म का भी ऑस्कर अवॉर्ड मिला है। इस फिल्म के डाइरेक्टर डैनी बॉयल को बेस्ट डाइरेक्टर के अवॉर्ड से नवाजा गया। स्लमडॉग को बेस्ट एडाप्टेड स्क्रीन प्ले का अवॉर्ड भी मिला है, साथ ही इसे सिनेमैटोग्राफी का भी ऑस्कर अवॉर्ड हासिल हुआ है।

भारत में बनी डॉक्यूमेंट्री फिल्म स्माइल पिंकी को भी ऑस्कर से नवाजा गया। मिर्जापुर की लडकी पिंकी की जिंदगी की कहानी पर बनी फिल्म 'स्माइल पिंकी' को बेस्ट शॉर्ट डॉक्यूमेंट्री का अवार्ड मिला। भारतीय फिल्म जगत के इतिहास में यह पहला मौका है, जब एक साथ उसके कई कलाकारों ने अकादमी अवॉर्ड समारोह में विजेता ट्रॉफी हासिल की। इसके पहले भानू अथैया को फिल्म गांधी के लिए सर्वश्रेष्ठ कास्ट्यूम और प्रख्यात निर्देशक सत्यजीत रे को लाइफटाइम एचीवमेंट के ऑस्कर पुरस्कार मिले थे।

ऑस्कर मे भी मुस्कुराई स्माइल पिंकी

भारत की एक लड़की पिंकी पर आधारित डॉक्यूमेंट्री 'स्माईल पिंकी' को सर्वश्रेष्ठ लघु डॉक्यूमेंट्री का ऑस्कर पुरस्कार मिला है। डॉक्यूमेंट्री का निर्माण अमेरिकी फिल्म निर्माता मेगान मायलैन को 'स्माईल पिंकी' के लिए ऑस्कर पुरस्कार से नवाजा गया।

बढ़ाएंगे अन्तर्मन का बोझ..?

✍ उत्तम झंवर

बात ऑस्कर मिल जाने की अब रही नहीं। हर हिंदुस्तानी के साथ विश्वभर के लोगों ए.आर.रहमान के संगीत के कायल हो चुके हैं। पूरी दुनिया जब दिनभर की भागदौड़ से थक कर सो जाती है। तब यह कलाकार आधी रात के सन्नाटे में सितारों की रोशनी के बीच सुरों के तार बुनता है। फिल्म स्लमडॉग मिलियनेयर में संगीत फिल्म की आत्मा के रूप में नजर आया। यही कारण है फिल्म हर ऐंगल पर परिपूर्ण नजर आई। इसके पहले मदर इंडिया, सलाम बॉम्बे और लगान भी इस दौड़ में शामिल हो चुके हैं। बस यूं हुआ कि ऑस्कर का चांद छू नहीं पाए। रहमान के संगीत ने फिल्म को हर अवॉर्ड से बढ़ कर बुलंदी दे ही दी है।

इस खुशी के साथ पिछले दिनों में एक खास बात के लिए खुश था। सोमनाथ चटर्जी ने चिल्लाने वाले सांसदों को उनकी औकात दिखाने के साथ श्राप भी दिया। उन्होंने आखिरकार कह ही दिया कि इन सांसदों की औकात दो कौड़ी की है और जनता को इस बार इन्हें हरा देना चाहिए। इस बयान को पढ़ कर हर आदमी हंसा। परन्तु इस हंसी के पीछे छिपे संजीदा से मुद्दे को कम ही लोग समझ पाए। इस बार किसे चुने और चुनने के लिए किस तरह के मापदण्ड निर्धारित करें? खैर सड़क, बिजली, पानी तो हमारे यहां चिरस्थाई मुद्दे हैं। इसके अलावा इस बार कुछ खास है तो केवल गरीब की रोटी नहीं बल्कि मध्यमवर्गीय परिवार की बात भी है।

कहीं ये नौकरी गंवा चुका है तो कहीं मंहगाई की मार के इतना नीचे दबा है कि दिमाग रोटी-कपड़े की जुगाड़ के आगे सोच ही नहीं पाता। तालिबान या पाकिस्तान से तुलना करें तो हमें बहुत आसानी से भावों की अभिव्यक्ति का अधिकार है। परन्तु इसका उपयोग कितना सही कर रहे हैं हम, ये तो हमारा अन्तर्मन बेहतर जानता है। इस अन्तर्मन का बोझ बढ़ाएं या घटाएं ये निर्णय तो अंततः हमें एक रोज लेना ही होगा।

मायूस तो हूं वायदे से तेरे
कुछ आस नहीं और कुछ आस भी है.